खुरशी पर नमाज़ पढने का हुक्म और मस्जीदो मे खुरशीयो के रिवाज की बुराईया

मुफती अहमद खानपुरी दब

सवाल

एक आदमी के घुटनो मे दर्द हे, और वो दर्द इस तरह हे चल फिर तो सकते हे, लेकिन जब सजदे मे जाते हे तो घुटनो पर वज़न आने की वजह से घुटनो मे दर्द होता हे, और इस दर्द के बढ जाने का भी डर हे, तो बंदे ने उनको इस तरह जवाब दिया क्यो की आप चल फिर सकते हे और कियाम और रूकू सजदह दोनो फर्ज़ हे, इसलिये कियाम और रूकू कर लिया जाये और जब सजदे का मौका आये तो खुरशी पर बैठ कर इशारे से सजदह कर लिया जाये ये जवाब तो बंदे ने दिया, बाद मे एक आलिम साहब के सामने ये मसअलह बंदे ने पेश किया, तो उन्होने बताया की बैठ कर इशारे से नमाज़ पढली जाये, तो मुज़े ख्याल हुवा, तो पूछना हे ऐसा आदमी किस तरह नमाज़ अदा कर सकता हे? मेरे बताये हुवे जवाब के मुताल्लीक उनकी नमाज़ दरूस्त होगी या नही? अगर नही हुवी तो उन नमाज़ो को दोहराना ज़रूरी हे या नही.
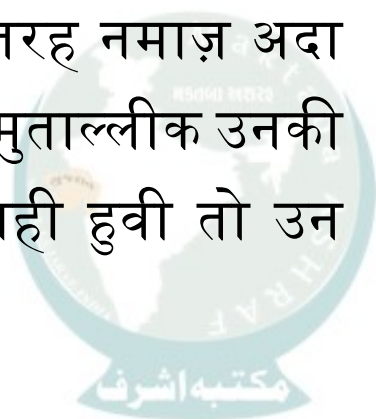
जवाब

हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तकी उस्मानी दब का नया तफसीली फतवा खुरशी पर नमाज़ पढने के मुतल्लिक माहनामह 'अलबलाग' मे शाय हुवा हे, उस मे हे: 'जो शख्स खडे होने पर कुदरत रखता हो और सजदह ना कर सकता हो उसे करात खडे हो कर ही करनी चाहीये, और अगर रूकू पर भी कादिर हे तो रूकू भी बाकायदह करना चाहिये, अलबत्ता सजदे के वकत ज़मीन पर बैठ जाये, और इशारे से सजदह करे, उसके बाद अगर दूसरी रकात के लिये उठने पर भी कादिर हो तो दूसरी रकात के लिये भी उठ जाये, और अगर इसमे सख्त तकलीफ हो तो बाकी नमाज़ बैठ कर इशारे से अदा करे. ये सूरत इसलिये पसन्ददिदाह हे की सब इमामो के नज़दीक उसकी नमाज़ सही हो जायेगी. आगे फरमाते हे इशारे से नमाज़ पढने के लिये खुरशी पर बैठना अगरचे बाज़ हालतो मे जाइज़ हे, लेकिन अफज़ल नही हे, इसलिये बिलाज़रूरत और बिलाउज़र खुरशी इस्तिमाल नही करनी चाहिये, बल्की आजकल खडे हो कर या ज़मीन पर बैठ कर नमाज़ पढने पर कुदरत होने के बावजूद

खुरशीयों पर बैठ कर नमाज़ अदा करने का जो रिवाज चल पडा हे इसमे नीचे दी गई वजहों की बिना पर बुराईयां पायी जाती हे.

(१) माजूर लोगो के लिये ज़मीन पर बैठ कर नमाज़ अदा करना अफज़ल और मस्नून तरीका हे, उसी पर हज़रते सहाबा रदी. और बाद के लोगो का अमल चला आ रहा हे, खुरशी पर नमाज़ अदा करने का रिवाज हमारे ज़माने मे ही शुरू हुवा हे, खेरू लकुरून अच्छे ज़माने मे इसकी मिसाल नही मिलती, हाला की उस ज़माने मे भी मार अफराद होते थे और खुरशिया भी होती थी.

(२) जो लोग शरई एतेबार से माजूर नही हे, यानी कियाम, रूक और सजदह पर कादिर हे, उनके लिये ज़मीन पर या खुरशी पर बैठ कर फर्ज़ वाजिब नमाज़ अदा करना जाइज़ नही, जबकी ये देखा जाता हे की बाज़-औकात ऐसे गैर माजूर अफराद भी खुरशीया देखकर उन पर बैठ कर नमाज़ अदा करने लगते हे, जिसकी वजह से उनकी नमाज़ ही नही होती.

(३) खुरशीयों के बिलावजह इस्तिमाल से सफों को सीधा रखने मे बहुत खराबी होती हे, हाला की सफो को मिलाने

और सीधा करने की बहुत ताकीद आई हे, एक हदीस मे हे अपनी सफे मिली हुवी रखो और उनको आपस मे करीब रखो, और अपनी गर्दने बराबर रखो, कसम हे उस ज़ात की जिसके कबज़े मे मेरी जान हे, मे शैतान को बकरी के काले बच्चे की तरह सफो के दरमयान मे घुसते देखता हू. (अज़मज़ाहिर हक ७२३/१)

(४) मस्जीदो मे बिला ज़रूरत खुरशीयों की ज़्यादती की वजह से ईसाईयो के चर्च और यहूदीयो की इबादत-गाह से मुशाबहत मालूम होती हे, जहा खुरशीयों और बेंचो पर बैठ कर ईसाई लोग इबादत करते हे, और दीनी कामो मे यहूद और नसारा वगैरा की मुशाबहत से मना किया गया हे.

(५) नमाज़ तवाज़ो और आजिज़ी की इबादत हे, और खुरशी पर बैठ कर नमाज़ अदा करने के मुकाबले मे ज़मीन पर बैठ कर नमाज़ अदा करने मे ये आजिज़ी बहुत अच्छे दर्जे मे पायी जाती हे.

(६) बाज़ जवान और तंदरूस्त नमाज़ी हज़रात नमाज़ के बाद इन कुर्सीयों पर आराम करते हे, और बाज़ मर्तबा ऐसे नमाज़ी खुरशीयों को एक हलके की शक्ल देकर इस
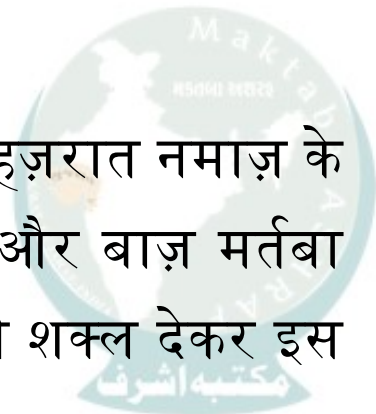
पर बैठ कर बातों मे मशगूल रहते हे, जो मस्जिद के अदब और इसकी शान के खिलाफ हे.

(७) मस्जीदो मे बगैर किसी उज़र के खुरशीयों का इस्तिमाल बाज़ सूरतो मे कुराने करीम और और बुज़ुर्ग नमाज़ीयो के अदब और एहतिराम के खिलाफ हो जाता हे.

इसलिये इशारे से नमाज़ पढने के लिये भी जहा तक हो सके खुरशीयों के इस्तिमाल से बचना चाहिये और उनके इस्तिमाल करने वालो का हौसला तोडना चाहिये, और इसका इस्तिमाल सिर्फ उन हज़रात ही को करना चाहिये जो ज़मीन पर बैठ कर नमाज़ अदा करने पर कादिर ना हो, अलबत्ता रूकू सजदे से माज़ूर अफराद के लिये खुरशी पर बैठ कर नमाज़ अदा करना इसलिये जाइज़ हे की जब कोई शख्स रूकू सजदे पर कादिर ना हो तो उसके लिये अगरचे अफज़ल यही हे की वो ज़मीन पर बैठ कर कर इशारे से नमाज़ अदा करे जैसा की हदीस मे बयान फरमाया गया हे, लेकिन फुकहाए किराम ने फरमाया हे ऐसा शख्स खडे खडे रूकू और सजदे का इशारा कर ले तो जाइज़ होगा.

चुनांचे फतहुल कदीर मे हे: “और अगर खडे हो कर इशारे से नमाज़ पढी तो सही हे, मगर ये की बैठ कर इशारा से पढना अफज़ल हे, इसलिये की वो सजदे से ज़्यादा करीब हे”. (फतहुल कदीर ४६०/१)

लिहाज़ा जब इशारे से नमाज़ पढने वाले के लिये ज़मीन ही पर बैठ कर पढना मुतय्यन और ज़रूरी ना हुवा, बल्की खडे हो कर इशारे से भी पढना जाइज़ हे, तो खुरशी पर बैठ कर भी इशारे से पढना जाइज़ हे, अलबत्ता खुरशी के मुकाबले मे ज़मीन पर बैठना अफज़ल हे, क्यों की ज़मीन पर बैठने वाला ज़मीन के ज़्यादा करीब होता हे. (माहनामा अलबलाग, कराची, जमादील अला १४३४ / अप्रैल २०१३ पेज ४६ से ४८)

अगर वो शख्स ज़मीन पर बैठ कर सजदे का इशारा कर सकता हे तो उसके लिये यही अफज़ल हे की ज़मीन पर बैठ कर इशारा करे.

फकत वल्लाहु तआला आलम.